# दिव्य हस्तलिखित संकेत

= बात यह है कि डेढ़ दो वर्ष पहले एक नवयुवक मुझसे
मिले एक गुप्त [illegible] थी, जिसका जिक्र
मैं कर चुका हूं। उन्हें श्री [illegible]
बहुत से लोग उनका नाम [illegible] उन्होंने
उनसे यह बातें पूछीं भी मैं [illegible] ही
आपलोगों को दिखलाऊंगा — या उनके यह
स्वयं लिखा हुआ है — यह पत्र आप
किसी को भी नहीं दिखाइयेगा। यह भी नहीं
दिखाने का कारण है, उनमें यह कोई
व्यक्तियों के जिक्र हैं, उनका एक दो कोई
कारणों से भी नहीं दिखला रहा हूं। मेरे पास प्राइवेट
[illegible] व [illegible] में अपने निजकर्म की
पुस्तकों के साथ रखा है यदि वे [illegible]
मेरे मरने तक [illegible] संयोग लगा रहा, आप
जिन्दे रहे, आपकी इच्छा रही तो निश्चय
ही सम्भव है [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] आदि कोई आपलोगों को दिखलाऊं।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आपका
पर मैं यह समझता हूं कि उन
महात्मा का प्रादुर्भाव [illegible] हुआ होगा,
जब [illegible] [illegible] दिल्ली के [illegible]
— उन्होंने यह पूछा — कि आप
श्री जयदयाल जी एवं हनुमान प्रसाद जी के
विषय में बतलाइये (बहुत से वर्ष पहले के
बारे) इनके उत्तर में जो उन्होंने कहा था वह यह
है — (वे हंसने लगे और बोले —) आप
मेरी परीक्षा ले रहे हैं, आप तो जानते होंगे
कि हनुमान प्रसाद का [illegible] बिलकुल
श्री [illegible] जी का स्वरूप होगया है।"

= ~~[illegible]~~ [illegible] अपनी
ओर से इस बात को समझाने की [illegible]

= बात यह है कि डेढ़ दो वर्ष पहले एक [illegible] में
मिली एक गुप्त चिट्ठी आयी थी, जिसका जिक्र
मैं कर चुका हूं। उसे श्रीकृपालसिंह [illegible] एक
बहुत अच्छे ढंग का नाटक लगा, और उन्होंने
उसके वह बातें पूछीं थीं ~~[illegible]~~ मैं पत्र ही
आपलोगों को दिखलाऊंगा — या उसके यह
स्वभाव मिलता होगा — यह पत्र आप
किसी को भी मत दिखाइयेगा। यह भी नहीं
दिखाने का कारण है, जैसा उसमें वह और
व्यक्तियों के जिक्र हैं, तथा एक दो और
बातों से भी नहीं दिखला रहा हूं। मेरे पास प्रमाणों,
प्रमाणों व सबूत रहे मैं अपने विचारों की
पुष्टि के साथ रखता पहिले (तो न था, मेरे)
मेरे मन में इतिवार संयोग लगा रहा, आप
सोचते हैं, आपकी इच्छा रही तो मिल
ही सकती है। अपना आगा [illegible] कोशिश
बदल आदि और आपलोगों का दिखला दूं।
और [illegible] मेरे [illegible] ताक के आधार
पर मैं यह समझता हूं कि उन
महात्मा का प्रादुर्भाव उस समय हुआ होगा,
जब हमारे जवाहर दिल्ली के नाका पर थे।
= उसी जब उन्होंने यह पूछा - कि आप
श्रीजवाहरलाल जी एवं डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जी के
विषय में बतलाइये (बहुत से वह प्रश्नों के
बारे) इसके उत्तर में जो उन्होंने कहा था वह यह
है — (वे हंसने लगे और बोले —) आप
मेरी परीक्षा ले रहे हैं, आप तो जानते होंगे
कि हनुमान प्रसाद का [illegible] बिलकुल
श्री [illegible] जी का स्वरूप हो गया है।"

= ~~मन मोहन विचार~~, अब मैं अपनी
ओर से इस बात को समझाने की [illegible]

# महज्जनोंके भावोद्गार

महाभावकी जो अगले स्तरकी चीज है, जिसकी रूपरेखा जीव गोस्वामी प्रभृति रसमर्मज्ञोंने भी नहीं खींची, वैसी चीज बाबामें व्यक्त हुई है। इनका काष्ठ मौन असलमें इनका रस-समुद्रमें निमज्जन है।

-श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार

राधाबाबा प्रेम, भक्ति और सत्यका प्रतीक। भक्ति मार्गकी जीवन्त मूर्ति। एक स्थिति है, जहाँ ब्रह्म सिवाय और कुछ भी नहीं। द्वैत, अद्वैत, ज्ञान, भक्ति सब एक ही हैं। वही है, जो स्थिति राधाबाबाकी है।

- श्रीआनन्दमयी माँ

श्रीराधाबाबा मणि हैं, प्रकाश हैं, शोभा हैं। श्रीराधाबाबा मेरी आत्मा हैं।

-श्रीश्रीयोगिराज ब्रह्मर्षि देवराहा बाबा

''जानेहु संत अनंत समाना'' यह मन्त्र सत्य ही प्रतीत होय हैं श्रीप्राणनाथकी लीला देख कै तथा सुन कै बड़े विज्ञ लोग हूँ आश्चर्यमें पर जाय हैं कारण कि बिचारी बुद्धिको वहाँतक गम्य नहीं एवमेव संतनकी लीला हूँ श्रीभगवल्लीलाके समान ही विचार राख्य सौं परै कि बात बन जाय है बात स्पष्ट है सब ही शरीरतक ही सोच विचार सकैं हैं यहाँ देहाध्यास रहे ही नहीं यह सत् श्री जीवन धन लीलामें निमग्न रहे हैं। सुकृत पुञ्ज बाबा (श्री श्रीराधाबाबा)के विषयमें तौ कुछ कहते ही नहीं बने ''मन सतेत जेहि जान न बानी.....''

-पूज्य पंडित श्रीगयाप्रसादजी 'सचल गिरिराज' गोवर्द्धन

राधा बाबाको अगर कोई एक-एक लक्षण पर परखे तो उनको सौ टंच खरा पायेगा। मुझे अगर एक विशेषणसे ही राधा बाबाको परिभाषित करना हो तो मैं उनको कहूँगा—'विशुद्ध संत'। तुलसीदासने भी संतके लिये यह विशिष्ट विशेषण शायद एक ही बार प्रयुक्त किया है :—

**संत बिसुद्ध मिलहिं परि तेही । राम कृपा करि चितवहिं जेही॥**

रामने अगर कृपाकर मेरी ओर देखा तो उसका एक मात्र सबूत मेरे लिये यही है कि राधाबाबा मुझे मिले।

-कविवर डा० हरिवंश राय 'बच्चन'